महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
ज्ञान शांति मैत्री
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252551 मो.9960562305 ईमेल-bsmirgae@gmail.com

महाराष्ट्र की विवादमुक्त गांव योजना

हिंदी विवि में हुआ शोध, सामाजिक शांति एवं ग्राम विकास की दिशा में उठाया गया कदम शोधकर्ता ने निकाला निष्कर्ष

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन का मूल अहिंसा एवं शांति के सिध्दांतों के अनुसरण में महाराष्ट्र सरकार ने 15 अगस्त 2007 को महात्मा गांधी विवादमुक्त गांव योजना आरंभ की। भारत के अन्य राज्यों के लिए आदर्श स्थापित करने वाली इस महत्वाकांक्षी योजना के आरंभ होने से गांवों के विवादों को सुलझाना आसान हुआ है, साथ ही गांव में शांति स्थापित करने की दिशा में यह योजना कारगर साबित हुई है। उक्त निष्कर्ष महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में हुए शोध में सामने आया है।

राज्य में यह योजना अब पांचवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। राज्य के सभी जिलों में इस योजना की उपस्थिति देखी जाती है। वर्धा जिले में भी यह कारगर रूप से चलायी जा रही है। इस योजना का क्या फल मिला तथा समाज पर इन बातों का क्या प्रभाव पड़ा इन बातों को शोध की दृष्टि से पहली बार अध्ययन किया गया है। विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति अध्ययन, एम. फिल्. के शोध छात्र दिनेश राउत ने इस योजना को अपने शोध का विषय बनाया।

राज्य तथा वर्धा जिले में यह योजना अब जनआंदोलन बन चुकी है। गांवों की स्वयंपूर्णता के लिए गांधी जी ने आग्रह किया था। विवादमुक्त गांव योजना इसी दिशा में उठाया गया विधायक कदम है। अपने शोध में दिनेश राउत ने वर्धा जिले की हिंगणघाट तहसील के धोची गांव पर विवादमुक्त गांव योजना के संदर्भ में शोध किया है। इस अध्ययन के अंत में निकले निष्कर्षों से एक बात सामने आयी है कि योजना के अंतर्गत गांव में पैदा होने वाले विवाद गांवों में सुलझाए जाते हैं, विवाद मुक्ति के लिए गांवों को पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं, गांवों में शांति स्थापित करने के लिए यह योजना कारगर साबित हो रही है, इससे लोगों के समय और पैसे की बचत होती है। यह योजना पर्यायी तंटा निवारण पध्दती (अल्टर्नेटिव्ह डिस्प्युट रिज्यॉल्युशन सिस्टम) सिध्द हो रही है और इस योजना से महात्मा गांधी का ग्राम विकास का सपना पूरा करने की दिशा में बल मिल रहा है।

शोध की व्यापकता

दिनेश राऊत ने यह शोध अहिंसा एवं शांति अध्ययन के सहायक प्रोफेसर डॉ. डी. एन. प्रसाद के मार्गदर्शन में पूरा किया है। अपने शोध की व्यापकता को बताते हुए उन्होंने लिखा है कि वर्धा जिले में 515 पंचायतों में से 2007–08 में विवादमुक्त गांव योजना के प्रथम चरण में 56 गांव पात्र हुए जिनमें हिंगणघाट तहसील का धोची गांव विशेष रूप से पात्र हुआ. धोची को एक लाख रूपये का सामान्य तथा 25 हजार रूपये का विशेष पुरस्कार प्राप्त हुआ. अन्य गांवों को कुल 1 करोड़ 10 लाख राशि के पुरस्कार दिए गए. योजना को लोगों तक पहुंचाने के लिए पत्रकारों को भी प्रोत्साहित करने का प्रावधान योजना में रखा गया है जिसके तहत जिला, संभाग और राज्य

स्तर पर प्रत्येक के लिए तीन पुरस्कार दिए जाते हैं। इस प्रकार की विकास पत्रकारिता के लिए वर्धा जिले के सुरेश बद्रे को 25 हजार तथा ओमप्रकाश अग्रवाल को 10 हजार का पुरस्कार दिया गया। पंचायत राज व्यवस्था के

मूल आधार के रूप में ग्राम पंचायत को महत्वपूर्ण माना गया है। शोधकर्ता ने स्पष्ट किया है कि इस योजना के माध्यम से पंचायत राज व्यवस्था को संबल मिल रहा है। अपने शोध के अंतर्गत उन्होंने योजना के जिला स्तर के अध्यक्ष यानी जिलाधिकारी अनूप कुमार यादव, तहसील स्तर के अध्यक्ष यानी तहसीलदार एवं पुलिस थाना स्तर के अध्यक्ष यानी वडनेर पुलिस थाना के थानेदार वाघमारे का साक्षात्कार भी लिये हैं।

धोची का संदर्भ

धोची गांव वर्धा जिले की हिंगणघाट तहसील के अंतर्गत वडनेर पुलिस थाना के तहत आता है। धोची में 142 मकान हैं। धोची और सावंगी संगम को मिलाकर जनसंख्या 963 है। वहां के घरों में शौचालय है और प्रत्येक मकान को नेम प्लेट लगायी गयी है। सन 2007–08 के लिए इसे एक लाख रूपये का पुरस्कार प्राप्त हुआ. साथ ही 25 हजार का विशेष पुरस्कार भी मिला. धोची विदर्भ का पहला और राज्य का पांचवा ऐसा गांव बना जो योजना के पहले ही साल में विवादमुक्त हुआ। विवादमुक्ति के अलावा धोची को आदर्श गांव, हागणदारी मुक्त गांव, शिक्षण अभियान, ग्राम स्वच्छता अभियान, सावित्रीबाई सर्व शिक्षा अभियान, गाडगे महाराज ग्राम स्वच्छता अभियान एवं डॉ. अंबेडकर शांति पुरस्कार ऐसे आठ पुरस्कार प्राप्त हुए. इन पुरस्कारों को पाने में गांव के लोग एवं विवादमुक्त समिति के सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान है।

गांधीजी आणि ग्रामीण संरचना

गांधी जी ने आदर्श ग्राम की संकल्पना प्रस्तुत की थी। ग्राम सफाई एवं स्वास्थ्य के लिए उन्होंने जनसहभाग की अपेक्षा की थी। वे मानते थे कि अहिंसा पर आधारित सुराज में कोई किसी का दुश्मन नहीं होता। उनका कहना था कि असली भारत गांवों में ही बसता है और इसके लिए उन्होंने गांवों की तरफ चलने का आग्रह किया था। उनके चिंतन और चिंता के विषय गांवों से ही प्रारंभ होते थे। गांधी जी के ये विषय राज्य सरकार ने **'महात्मा गांधी विवादमुक्त गांव योजना'** के अंतर्गत हाथ में लिया है। अब यह विषय अन्य राज्यों के भी विषय हो सकते हैं। वैश्विक दृष्टि से देखा जाए तो यह योजना अब यूनाइटेड नेशन्स यानी यूनो के एजेंडे पर भी आयी है। अपने 104 पृष्ठों के शोध के माध्यम से दिनेश राऊत का यह प्रयास विवादमुक्त गांव योजना और राज्य सरकार के विकासात्मक उपक्रमों के लिए दिशादर्शक होगा।

बी. एस. मिरगे
(जनसंपर्क अधिकारी)